Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 6.280, Volume 11, No. 03, July-Sept. 2021, pp. 32-35

विद्यापति की राधा एवं सूरदास की राधा में समानता

डॉ. अर्चना श्रीवास्तव*

सार

विद्यापति आदिकाल के कृष्ण भक्त कवि हैं और सूरदास भक्तिकाल के कृष्ण भक्त कवि । दोनों के काव्य में वर्णित राधा के स्वरूप में पर्याप्त भिन्नताएँ होते हुए भी बहुत कुछ समानतायें भी हैं । दोनों ने ही राधा को अलौकिक धरातल पर उतारा है। जहाँ एक ओर विद्यापति राधा को छितितल लावनीं सार बताते हैं वहीं दूसरी ओर सूरदास राधा के अपार सौंदर्य की चर्चा करने में पीछे नहीं हैं,वे राधा के सौंदर्य को अनुपम बाग बताकर उसका परिचय कराते हैं । दोनों ने ही राधा को कृष्ण की सहचरी कहा है तह दोनों ही राधा को कृष्ण की शक्ति मानते हैं। जहाँ विद्यापति राधा को आह्लादिनी शक्ति मानते हैं वहीं सूरदास राधा को कृष्ण की पराशक्ति मानते हैं। राधा की मूल प्रकृति में भी समानता है। सूर ने तो यह तक कह दिया है कि यदि कृष्ण शक्तिमान हैं तो राधा उनकी शक्ति हैं, शक्ति के बिना वे शक्तिमान नहीं, शक्तिहीन हैं। दोनों कवियों ने यह बताने का प्रयास किया है कि राधा के बिना कृष्ण का अस्तित्व नहीं वे उनके बिना अधूरे हैं। यदि कृष्ण के जीवन में राधा का आविर्भाव न होता तो वे राधा रहित हो जाते। श्रीकृष्ण नाम राधा के कारण ही है, श्री के अलग होते ही कृष्ण नाम अस्तित्वहीन हो जाए, इसमें किंचित मात्र भी संदेह नहीं ।

शब्दकुंजी– *अलौकिक, वाङ्मय, प्रज्ञाशक्ति, मूलप्रकृति, बहिर्मुखता, अनुप्राणित।*

प्रस्तावना

मध्यकालीन साहित्य को यदि एक शब्द में अभिव्यक्त करना हो तो निःसंकोच कहा जा सकता है– वह शब्द है 'राधा' राधा जो मध्यकालीन साहित्य की प्रेरणा रही है, साहित्यकारों की अधिष्ठात्री देवी रही है। साथ ही वह नारी की ऐसी मांसल मूर्ति है जिसके शरीर के हर अणु में कच्ची मिट्टी की गंध और आत्मा के प्रत्येक चेतन परमाणु में दिव्य प्रेम की अलौकिक छटा विद्यमान है। छठवीं शताब्दी से सत्रहवी शताब्दी तक का संपूर्ण वाङ्मय इस अनुपम नारी रत्न की व्यतिकर सौन्दर्य दृष्टि से अनुप्राणित हुआ है।

राधा का व्यक्तित्व पूर्णतः अंतर्मुखी है। शक्ति शक्तिमान के भीतर रहती है। शक्तिमान प्रकाश स्वरूप होते हैं। अतः बहिमुर्खता कृष्ण में ही हो सकती है, राधा में नहीं। श्री कृष्ण रस रूप है, उनका स्वरूप उनकी रसात्मक शक्तियों से ही विनिर्मित है। राधा रसात्मक सिद्धि है। अंतर्मुखता एवं तदरूपता के कारण राधा का व्यक्तित्व भाव–प्रधान है। उसका नैतिक अहम अति प्रबल है, जिससे वह अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर कार्य करती है। सूरसागर में राधा का चरित्र नारी की सभी जीवन दशाओं का सम्यक निर्देशन है, किंतु सूरदास की प्रज्ञाशक्ति में इन सब का पर्यवसान प्रभु की परम पूजा में कर दिया है। राधा की यह मूर्ति जो वैदिक काल से पृथ्वी से स्फुटित होकर नाना पुराणों के देवी रूपों से पुष्ट होती हुई मध्यकालीन प्रेम प्रधान काव्यों में प्राण प्रतिष्ठा प्राप्त करके जयदेव के काव्य की शोभा बनी– जो विद्यापति को पारिवारिक दाय के रूप में प्राप्त हुई। उन्होंने राधा की इस प्रतिमा को अपनी दृष्टि से देखा, सोचा, समझा और अपनी संपूर्ण साधना शक्ति के संयोग से उसे अभिनव रूप प्रदान किया। वहीं सूरदास ने भागवत की परंपरा का निर्वाह करते हुए राधा का स्पष्ट नामोल्लेख करने में कुछ संकोच किया है।

* प्राचार्य, गणेश महाविद्यालय, गनेड़ी, सीकर, राजस्थान।

विद्यापति की राधा के रूप, शील और चरित्र में कुछ ऐसा है जिसे केवल विद्यापति ही प्रस्तुत कर सकते थे। राधा उनके संपूर्ण मानस सौंदर्य का धन–विग्रह है। इस मूर्ति के निर्माण में कवि ने अपना सारा निजत्व, हृदय का संपूर्ण भाव–संचार अर्पित कर दिया है। सूरदास ने भी अपने काव्य में राधा को विशेष स्वरुप प्रदान किया है। वे भक्ति का उत्कृष्टतम रूप राधा को मानते थे। उन्होंने राधा को अपने काव्य की मुख्य नायिका बनाया और उसे विशुद्ध एवं सहज रूप प्रदान किया। उभय कवियों के काव्य में वर्णित राधा के स्वरूप में जो समानताएं हैं उन्हें हम निम्नलिखित रूपों में व्यक्त कर सकते हैं :–

- **अधिष्ठात्री देवी के रूप में–** विद्यापति ने सुदीर्घ वेदोत्तर एवं वैष्णवी परंपरा का निर्वाह करते हुए राधा को अधिष्ठात्री देवी के रूप में देखा है। राधा का प्रथम दर्शन उनकी दिव्यता के साथ कराते हैं। वे स्वयं ही राधा के रूप–वैभव से चकित हो उठते हैं तथा उनके दिव्य चरणों को अपनी गोद में रखकर उनके रूप वर्णन का द्वार खोल देते हैं। वे राधा के रूप में देवी के दर्शन करते हैं तथा उनके सौन्दर्य–वर्णन में अपने हृदय के पवित्र भावों को समर्पित करते हैं–

"देख–देख राधा रूप अपार ।
अपरुब के विहि आन मिलाओल, खितितल लावनि सार ।।"
अंगहि अंग अनंग मुरझायत हेरए पड़ए अधीर ।
मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हरि मधिगीर ।।
कत–कत लखिमी चरण तल ने ओछए रंगिनी हेरि विभोर ।।
करु अभिलाख मनहिं पद पंकज अहोनिसि कोर अगोर ।।"

इसी प्रकार सूरदास भी राधा को देवी के रूप में देखते हैं। उनकी राधा एक साधारण ग्वालिनी है। राधा जब कृष्ण के साथ खेलती है, हँसती है, छेड़छाड़ करती है तब बह शुद्ध प्रेमिका के रूप में दिखाई देती है। उनकी राधा तीन लोक से न्यारी है, मिलन में लीला की सहचरी है तो विरह में करुणा की मूर्ती है। सूरदास उनकी सुंदरता पर मुग्ध है। वे राधा के सौन्दर्य वर्णन में अपने भक्त हृदय के उद्‌गार व्यक्त करते है–

"सुन मोहन तेरी प्राण प्रिया को वरनौ नंदकुमार ।
जो तुम अति अंत मेरो गुन मानहु उपकार ।।"

कविवर विद्यापति का रूप सौन्दर्य वर्णन देखिए–

"माधव की कहब सुंदरि रूपे।
कतेक जतन विहि आन समारल देखत नयन सरूपे ।।
पल्लव राज चरण जुग सोभित गति गजराज क माने ।
कनक कदली पर सिंह समारल तापर मेरु समाने ।। "

राधा के इसी अद्‌भुत सौन्दर्य का चित्रांकन सूरदास के पद मे भी देखिए–

"अद्‌भुत एक अनुपम बाग ।
जुगल कमल पर गजवर क्रीडत तापर सिंह करत अनुराग ।।
हरि पर सरवर सर पर गिरिवर गिरि पर फूले कंज पराग ।
रुचिर कपोल बसत ता ऊपर, ता ऊपर अमृत फल लाग ।।"

- **कृष्ण के आह्लादिनी शक्ति के रूप में**– हिन्दी साहित्य में आदिकाल से ही राधा को कृष्ण की शक्ति माना गया है। कृष्ण की तीन शक्तियों में से आह्लादिनी शक्ति एक है, जो कृष्ण के प्रणय की विकार है। राधा कृष्ण की सहचरी है, वह रूप की राशि, सुख की खान, आनंद की धाम तथा शील आदि गुणों

की सलिला है। विद्यापति ने अपने काव्य में राधा के इसी रूप की आराधना की है। वे राधा के चरणों पर सत–सत लक्ष्मी और कामदेव को न्योछावर करते है। सूरदास के काव्य में भी राधा कृष्ण की आह्लादिनी शक्ति के रूप में दिखाई देती है। सूरदास ने राधा को कृष्ण की रासेश्वरी कहा है। वे कृष्ण के साथ हर हाल में खुश है, वे रासलीला में भी कृष्ण की परछाई बनकर उनके साथ रहती है। इस प्रकार कृष्ण के बिना उनका व्यक्तित्व नगण्य है। कृष्ण राधा के रंग में इस प्रकार रंगे हुए हैं कि एक पल भी राधा के बिना चैन नहीं पाते। वसंत के वातावरण में वे राधा के साथ रास रचाते हैं। देखिये सूरदास के काव्य में इसका मार्मिक चित्रण–

"विहरत रास रंग गोपाल ।
नवल स्यामा संग सोहत नवल सब ब्रजबाल ।।
शरद निसि अति नवल उज्ज्वल नव लतान धाम ।
परम निरमल पुलिन जमुना कल्पतरु विसराम ।।
कोस द्वादस रास परिहित परिमित रच्यौ नंदकुमार ।
सूर प्रभु सुख दियो निसि रमि काम– कौतुक सार ।।"

इसी प्रकार के वातावरण में राधा के सौन्दर्य का वर्णन देखिए विद्यापति के काव्य में –

"रितुपति राति रसिक रसराज । रसमय रास रभस रस माँझ ।।
रसमति रमनि रतन धनि राहि । रास रसिक सह रस अवगाहि ।।
रंगिनि गन सब रंगहि नटहि । रन रनि कंकन किंकिन रटहि ।।
रहि दृ रहि राग रचय रसबंत । रति रत रागिनि रमन बसंत ।।
रटति रवाब महतिक पिनास । राधा रमन करि मुरलि विलास ।।"

दोनों कवियों के काव्य में राधा के स्वरूप का अध्ययन करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि दोनों ने ही राधा को कृष्ण की शक्ति माना है। दोनों कवियों के अनुसार राधा कृष्ण की पराशक्ति है। कृष्ण राधामय है और राधा कृष्णमय है। वे परारूप में कृष्ण का आह्लादन करती हैं। उनकी सेवा में निरंतर लगी रहती हैं। कृष्ण का हरि रूप राधा के कारण ही है। जैसे शिव शक्ति से पृथक नहीं हो सकते वैसे ही कृष्ण भी राधा से पृथक नहीं है।

- **मूल प्रकृति स्वरूपा**– वेद पुराणों में राधा का जो स्वरूप है, वही आगे चलकर हिन्दी साहित्य में अवतरित हुआ है। भागवत से लेकर पुराणों तक राधा को शक्ति के रूप में ही प्रतिष्ठ किया गया । उनको जगतपति की प्रकृति स्वरूपा माना गया है ।

सूरदास की राधा कृष्ण की शक्ति होकर भी उनकी आराधिका है । उसकी भक्ति में तन्मयता है, वह कृष्ण प्रेम में ध्यानमग्न होकर अवधान की परिपूर्णता को प्राप्त कर लेती है। देखिये सूरदास का एक पद दृ

"निरखि पिय रूप तिय चकित भारि ।
कियो पुरुष में नारि पुरुष तनु सुधि विसारी ।।"

सूरदास की तरह विद्यापति की राधा भी एकात्म भाव से कृष्ण के रंग में रंगी हुई है। वह चारो ओर कृष्ण के ही दर्शन करती है। मूल प्रकृति होने पर भी वह प्रतिक्षण कृष्ण के दर्शन के लिए लालायित रहते है। वह कृष्ण को देख कर भी नहीं देख पाती, लज्जावश अपने नेत्र नीचे झुका लेती है तथा कृष्ण के चले जाने पर पुनः उनको देखने के लिए व्याकुल हो जाती हैं। वह जब कृष्ण की सुंदर छवि को निहारती है तब बार बार कृष्ण को देखने की अभिलाषा करती है। वह अपने मन की इस व्यथा को अपनी सखी के समक्ष प्रस्तुत करती है–

"इक दिन हरि हेरि हँसी–हँसी जाय ।

अरू दिन नाम धए मुरलि बजाय ।।
आजु अति नियरे करल परिहास ।
न जानिए गोकुल ककर विलास ।।
साजनि ओ नागर– सामराज ।
भूल बिनु पर– धन माँग वे आज ।।
परिचय नहि देखि आनक काज ।
न करए संभ्रम न करए लाज ।।"

सूरदास की राधा प्रकृति हैं और कृष्ण पुरुष हैं। वे प्रकृति स्वरूप में कृष्ण की शक्ति हैं। स्याम रंग में रंगी रोम–रोम से अनुरक्त कृष्ण रस से उन्मत्त राधा जमुना–जल लेने जाती हैं । मन ही मन कृष्ण के ध्यान में निरत अनुरागिनी राधा कृष्ण दर्शन की अभिलाषा में लीन हो जाती हैं–

"राधा स्याम रंग रंगी ।
रोम–रोमनि भेद गयो अंग–अंग पगी ।।
प्रीति दै मन लै गयो हरि नंद नंदनु आपु ।
कृष्ण रस उन्मत्त नागरि दुरति नहिं परतापु ।।
चली यमुना जात मारग ह्रदै यहै विचार ।
सूर प्रभु को दरस पाऊँ, निगम आगम अपार ।।"

वैसे तो हिंदी साहित्य के लगभग सभी कवियों ने राधा को अपने काव्य में प्रस्तुत किया है, उसकी विभिन्न रूपों में आराधना की किन्तु राधा का जो स्वरूप विद्यापति और सूरदास के काव्य में हैं वैसा अन्यत्र नहीं। यदि विद्यापति ने राधा के सौन्दर्य को पूर्ण मनोयोग के साथ प्रस्तुत किया है तो सूरदास ने भी राधा के सौन्दर्य वर्णन में कोई कसर नही छोड़ी है। दोनों कवियों के काव्य में वणनित राधा के स्वरूप की समानता को देखने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों ही कवियों ने राधा के वर्णन में अपनी संपूर्ण सृजन शक्ति लगा दी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. श्रीमद् भागवत : वेदव्यास, स्कन्द पुराण, अध्याय–1 पदसंख्या–22
2. देवी भागवत : स्कन्द–9, अध्याय–13 पदसंख्या–105
3. विद्यापति पदावली : रामवृक्ष बेनीपुरी, पृष्ठ संख्या–21
4. विद्यापति पदावली : देशराज भाटी, पृष्ठ संख्या–322
5. सूरसागर सार : डॉ॰ ब्रजेश्वर शर्मा, पृष्ठ संख्या–220
6. सूरसागर : सूरदास पदसंख्या–2546
7. विद्यापति पदावली : देशराज भाटी, पृष्ठ संख्या–125
8. विद्यापति : अनुशीलन और मूल्यांकन : डॉ॰ वीरेंद्र श्रीवास्तव

♦❐♦